BPSC: 134

अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध : एक परिचय

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण प्रश्न

With PDF'S

Scholarly Minds

1. द्विध्रुव विश्व प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

उत्तर:

द्विध्रुवीय विश्व प्रणाली (Bipolar World Order) वह वैश्विक व्यवस्था थी, जिसमें दो प्रमुख शक्तियाँ या केंद्र होते थे, जो वैश्विक राजनीति, सैन्य और आर्थिक मामलों में अपनी प्रभुत्व स्थापित करती थीं। यह प्रणाली शीत युद्ध (Cold War) के समय से जुड़ी हुई है, जो 1945 से 1991 तक चलने वाली एक अंतरराष्ट्रीय स्थिति थी, जब दुनिया दो प्रमुख राजनीतिक गुटों में विभाजित थी:

1. **पश्चिमी गुट**: इसका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका (USA) करता था। यह गुट पूंजीवाद, लोकतंत्र और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांतों को बढ़ावा देता था। इसमें नाटो (NATO), यूरोपीय देशों, और अन्य लोकतांत्रिक देशों का समावेश था।
2. **पूर्वी गुट**: इसका नेतृत्व सोवियत संघ (USSR) करता था। यह गुट समाजवाद और केंद्रीकृत राज्य की अवधारणा पर आधारित था। इसके अंतर्गत वारसा पैक्ट (Warsaw Pact) देशों, जो मुख्यतः कम्युनिस्ट शासन वाले थे, का समावेश था।

शीत युद्ध एक प्रकार की वैचारिक, सैन्य, और कूटनीतिक प्रतिस्पर्धा थी, जो दोनों महाशक्तियों के बीच चल रही थी, जिसमें सीधी सैन्य टक्कर के बजाय राजनीतिक दबाव, सूचनाओं की लड़ाई, आर्थिक सहायता, और गुप्त युद्ध गतिविधियों के माध्यम से संघर्ष होता था। उदाहरण के लिए, **कोरियाई युद्ध (1950-1953)** और **वियतनाम युद्ध (1955-1975)** में दोनों महाशक्तियाँ एक-दूसरे के खिलाफ अपनी नीतियाँ अपनाती थीं, हालांकि सीधी सैन्य टक्कर से बचने की कोशिश की जाती थी।

द्विध्रुवीय विश्व प्रणाली के प्रमुख लक्षण थे:

- **गुटों में बंटे हुए देश**: नाटो और वारसा पैक्ट जैसे सैन्य गठबंधन।
- **शीत युद्ध की स्थिति**: दोनों शक्तियाँ एक-दूसरे को आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य तरीके से कमजोर करने की कोशिश करती थीं।
- **वैचारिक संघर्ष**: पूंजीवाद और साम्यवाद के बीच विचारधारा की लड़ाई।
- **नई शक्ति संतुलन**: एक तटस्थ तीसरे पक्ष को स्वतंत्र रूप से नीति अपनाने में मुश्किल होती थी क्योंकि वे दोनों महाशक्तियों द्वारा प्रभावित होते थे।

1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद द्विध्रुवीयता समाप्त हो गई, और **एकध्रुवीय (Unipolar) विश्व व्यवस्था** उत्पन्न हुई, जिसमें अमेरिका प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा।

2. भूमंडलीकरण के विभिन्न आयामों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

भूमंडलीकरण (Globalization) एक व्यापक और जटिल प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से दुनिया के विभिन्न हिस्से आपस में और अधिक जुड़े हुए हैं। यह एक अंतरराष्ट्रीय प्रवृत्ति है, जो सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से विश्व के देशों को एक दूसरे से जोड़ती है। भूमंडलीकरण के प्रमुख आयाम इस प्रकार हैं:

1. **आर्थिक आयाम**:
    - भूमंडलीकरण का सबसे प्रमुख और स्पष्ट आयाम आर्थिक है। इसमें अंतरराष्ट्रीय व्यापार का विस्तार, वित्तीय बाजारों का एकीकरण, और पूंजी प्रवाह का बढ़ना शामिल है। इससे दुनिया भर में वस्तुओं, सेवाओं, और पूंजी के आदान-प्रदान में वृद्धि हुई है।
    - बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (MNCs) का प्रभाव बढ़ा है, जो दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अपनी सेवाएं और उत्पाद बेचती हैं।
    - इसने विकसित और विकासशील देशों के बीच आर्थिक अंतर को और बढ़ाया है। विकासशील देशों में उत्पादन की लागत कम होने के कारण कई बड़ी कंपनियाँ इन देशों में निवेश करती हैं, जिससे स्थानीय रोजगार पैदा होते हैं, लेकिन इन देशों में श्रमिक शोषण की समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं।
2. **सांस्कृतिक आयाम**:
    - सांस्कृतिक भूमंडलीकरण में, विश्व भर की संस्कृतियाँ आपस में प्रभावित होती हैं। पश्चिमी संस्कृति, विशेषकर अमेरिकी संस्कृति, अन्य देशों में फैली है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी फिल्मों, संगीत, और फैशन का अन्य देशों पर प्रभाव देखा जाता है।
    - वैश्विक मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से लोग दुनिया भर के विभिन्न संस्कृतियों से जुड़ते हैं। हालांकि, कुछ आलोचकों का मानना है कि यह 'संस्कृतिक साम्राज्यवाद' के रूप में प्रकट हो सकता है, जिसमें छोटे और स्थानीय संस्कृतियाँ खत्म हो सकती हैं।
    - इसके साथ ही, लोकल सांस्कृतिक पहचान की रक्षा करने के प्रयास भी देखे जाते हैं।
3. **राजनीतिक आयाम**:
    - राजनीतिक दृष्टिकोण से, भूमंडलीकरण ने अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं को अधिक प्रभावी बनाया है, जैसे संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (WTO), अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)। इन संस्थाओं के माध्यम से वैश्विक मुद्दों, जैसे पर्यावरणीय संकट, मानवाधिकार उल्लंघन और अंतरराष्ट्रीय व्यापार नियमों को नियंत्रित किया जाता है।
    - राजनीतिक निर्णय अब केवल एक देश की सीमाओं तक सीमित नहीं रहते। वैश्विक ताकतें और अंतरराष्ट्रीय संगठन देशों की आंतरिक नीतियों में भी प्रभाव डाल सकते हैं।
4. **प्रौद्योगिकी आयाम**:
    - प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने भूमंडलीकरण को संभव बना दिया है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, सोशल मीडिया, और अन्य डिजिटल प्लेटफार्मों के माध्यम से लोग विश्व के किसी भी हिस्से से जुड़े रह सकते हैं।

Scholarly Minds

- इसका सकारात्मक प्रभाव यह है कि वैश्विक शिक्षा, व्यापार और समाज में सुधार हो रहा है, लेकिन नकारात्मक रूप से यह तकनीकी अंतर को भी बढ़ाता है, जहां विकसित और विकासशील देशों के बीच डिजिटल असमानता बढ़ जाती है।

5. **पर्यावरणीय आयाम**:
   - भूमंडलीकरण का पर्यावरण पर भी गहरा प्रभाव पड़ा है। वैश्विक उत्पादन और उपभोग पैटर्न के कारण, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, और जैव विविधता की हानि जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।
   - कई देशों के बीच पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता है। इस संदर्भ में, **पेरिस जलवायु समझौता** और अन्य अंतरराष्ट्रीय पहलें महत्वपूर्ण हैं।

3. अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में मार्क्सवादी दृष्टिकोण की व्याख्या कीजिए।

उत्तर:

मार्क्सवादी दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में वैश्विक राजनीति को वर्ग संघर्ष और आर्थिक संरचनाओं के संदर्भ में समझता है। यह दृष्टिकोण विशेष रूप से पूंजीवादी व्यवस्था और श्रमिक वर्ग के बीच संबंधों पर आधारित है।

मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्तियों का वितरण और देशों के बीच संघर्ष मुख्यतः **आर्थिक संरचनाओं** और **संसाधनों के वितरण** पर आधारित होता है। इस दृष्टिकोण में वैश्विक राजनीति को निम्नलिखित तत्वों के माध्यम से समझा जाता है:

1. **पूंजीवाद और साम्राज्यवाद**:
   - मार्क्सवादी दृष्टिकोण में, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद पर विशेष ध्यान दिया जाता है। साम्राज्यवाद एक ऐसी नीति है, जिसमें समृद्ध देशों द्वारा कमज़ोर देशों का शोषण किया जाता है। इसका उद्देश्य कच्चे माल, सस्ते श्रमिकों, और नए बाजारों का दोहन करना होता है।
   - इसके तहत, यूरोपीय देशों ने अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में उपनिवेश स्थापित किए, और इन देशों से संसाधनों का दोहन किया।
2. **विकसित और विकासशील देशों के बीच असमानता**:
   - मार्क्सवादी दृष्टिकोण में, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में असमानता की व्याख्या की जाती है। इसके अनुसार, विकसित देश अपने आर्थिक, राजनीतिक, और सैन्य प्रभुत्व का उपयोग करते हुए विकासशील देशों का शोषण करते हैं।
   - उदाहरण के लिए, अंतरराष्ट्रीय व्यापार और पूंजी निवेश की प्रणाली में विकासशील देशों को नुकसान होता है क्योंकि विकसित देश अपने हितों को प्राथमिकता देते हैं, और विकासशील देशों को उपभोक्ता और कच्चे माल के स्रोत के रूप में उपयोग करते हैं।
3. **संस्था और शोषण**:
   - मार्क्सवादी विचारक यह मानते हैं कि अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ, जैसे कि **संयुक्त राष्ट्र (UN)**, **विश्व व्यापार संगठन (WTO)**, और **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)**, अक्सर समृद्ध देशों के हितों को बढ़ावा देने के लिए काम करती हैं। इन संस्थाओं के माध्यम से, विकसित देशों का प्रभुत्व कायम रहता है, और विकासशील देशों की स्वतंत्रता और अधिकार सीमित हो जाते हैं।

Scholarly Minds

    - मार्क्सवादी दृष्टिकोण में यह भी माना जाता है कि इन संस्थाओं का प्रमुख उद्देश्य वैश्विक पूंजीवाद को कायम रखना है, ताकि वैश्विक शोषण की व्यवस्था चलती रहे।
4. **वैश्विक क्रांति की आवश्यकता**:
    - अंततः, मार्क्सवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि एक वैश्विक क्रांति की आवश्यकता है, ताकि पूंजीवादी व्यवस्था का अंत हो सके और एक समान और न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था का निर्माण हो सके।

4. वर्साय की संधि पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

वर्साय की संधि (Treaty of Versailles) 28 जून 1919 को प्रथम विश्व युद्ध के समापन के बाद हस्ताक्षरित हुई थी, जिसका उद्देश्य युद्ध के परिणामस्वरूप उत्पन्न परिस्थितियों को समाप्त करना और शांति स्थापित करना था। यह संधि फ्रांस के वर्साय महल में संपन्न हुई, और इसमें जर्मनी को युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराया गया था।

वर्साय की संधि के प्रमुख प्रावधान:

1. **जर्मनी को दोषी ठहराना**: संधि में जर्मनी को युद्ध के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार ठहराया गया था (Article 231), जिसे "युद्ध अपराधी क्लॉज़" (War Guilt Clause) कहा गया। जर्मनी को स्वीकार करना पड़ा कि उसने प्रथम विश्व युद्ध को उत्पन्न किया।
2. **क्षतिपूर्ति**: जर्मनी से भारी युद्ध क्षतिपूर्ति (reparations) वसूली गई, जिसे जर्मनी को फ्रांस, बेल्जियम, और अन्य देशों को भुगतान करना था।
3. **सैन्य प्रतिबंध**: जर्मनी की सेना को केवल 100,000 सैनिकों तक सीमित कर दिया गया, और उसे युद्धक विमानों, टैंकों, और समुद्री जहाजों के निर्माण से भी प्रतिबंधित किया गया।
4. **साम्राज्य का विघटन**: जर्मनी के उपनिवेशों को विभाजित कर दिया गया, और फ्रांस और ब्रिटेन ने इन पर नियंत्रण स्थापित किया।
5. **सीमाओं का पुनर्निर्धारण**: जर्मनी की सीमाओं को बदल दिया गया और उसे कई क्षेत्रों से हाथ धोना पड़ा, जैसे एलसास-लॉरेन (Alsace-Lorraine), पोलैंड को स्वतंत्रता, और डेनजिग (Danzig) का मुक्त नगर बनना।

वर्साय की संधि की आलोचना:

- जर्मनी को एकतरफा और अपमानजनक रूप से संधि के दायित्वों को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया। इससे जर्मन जनमानस में गहरी निराशा और आक्रोश उत्पन्न हुआ।
- यह संधि **संप्रभुता और राष्ट्रीय गरिमा** के उल्लंघन के रूप में देखी जाती थी, और इसके कारण जर्मन समाज में **नाजी पार्टी** और **हिटलर** जैसे नेतृत्वों का उदय हुआ।
- वर्साय की संधि ने वैश्विक आर्थिक संकटों और **द्वितीय विश्व युद्ध** के उत्पन्न होने की जड़ तैयार की।

निष्कर्ष: वर्साय की संधि के द्वारा जर्मनी पर लादी गई शर्तों ने न केवल युद्ध के बाद की शांति प्रक्रिया को उलझाया, बल्कि भविष्य में वैश्विक संकट और द्वितीय विश्व युद्ध का मार्ग भी प्रशस्त किया।

Scholarly Minds

WATCH OTHER PARTS AVAILABLE ON MY CHANNEL

PDF IS ON MY WEBSITE HINDUSTAN KNOWLEDGE

SUBSCRIBE IF YOU ARE NEW TO MY CHANNEL

Scholarly Minds